

उसं३

[illegible]

आर्य समाज

1870



१ सं. २२ वे शासन कृत यथावत् लिखितं, भवति, नास्ति तदस्य कृति यथावत् लिखितं ।
॥ श्री ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यामि ननु वृ ॥ हवतु कुरु वंशं
 वाहगनं योऽं वरेणादिरुः पूजितां रथवृषां । स्वकी
 येः पुराहितं सहा मददां हवतु गीरुवातीं सह दारुणं
 ॥ महाकालं सवृषां कर्माणां सगुणं कर्षां दत्तातार
 वकुं । युक्ताम्याह कालीकमात्रीविकायां हवतु उकार
 प्रकाशादि वृषां ॥ मृगानी मय नृवि दानन्द वृषां गितो

मीनवती वलु की माह वानुं । सनन्दो जयको गवा लंक
 गी गो । युयी प्रमृष्टां रवेंज मिह वा दां ॥ महं गति
 या पाव गो युष्म कालीं मलिता जमान सयी । ० निषर्ग
 । मनः कामदा नृषीं सत्रेः मया मानां कमात्री पवयार
 ऊरु नन वृषां ॥ ॥ मरुत उरु ममां सत्व सं ह्यः पु वरु
 युकादि पुरां काल वृषां । कलादि रुया नृ ग सुतम

कां प्रलाकान्क का न रुज सत्त्व नृपा ॥ विधा र्वा य म
नां पु व र्वा पु क ली ज ग त्मा न रु न्मा ज नि स्वा न्क सं स्का
ज ग जी व नृपा ज ग रु न्मा धी र्वा ज ठा कू ठ पु र्वा रु ज
या व नृपा ॥ ल म धा गि वि ल व वि न्मा रि वा मां ल म वि ल
ता ग्मा म हा या गि वं धी । न वी या ध या न्मा रि वा मा रि रु धी
रु ज स च वे र्वा म्मा ता रु म्मा वी ॥ न दी सि न्धु र्वा रु म्मा

न न न न्दी रु ज रु वि ता रु म्मा लि वा वा व वा वा । रु नृपा व
ना मां स नृपा र्वा य मा नां वि ल रि पु व रु म्मा नृपा व हा वी ॥
नि व रु म्मा ज ना ना म्मा नृपा य रु वी क स दा धी य मा नां वि व
का य न रु ॥ वि द कि स्वि ल वि व का न्मा न रु म्मा न वाम्मा
दि मा या ग र्मा पा त्म न रु ॥ रु वा र्थ सु पा न पु व रु क
जि हा रु न रु नृपा ल म्मा व रु रि ल । ल म्मा व रु वी ल

अग्नीन्द्रियं सूक्ष्ममननमायं ध्यायेत्तत्रानन्दमयं मह
र्षी ॥ ध्यानावधूताखिलकर्मवन्धः चित्रं चिदातन्दनि
मग्नयेत ॥ षष्ठं कुरु न्याससमाहितात्मा (लोचनकुर्य)
कवयेन वक्षी ॥ मां पारुदवाखिलदवतात्मा संसाव
कूपपतिर्गगरीव ॥ तन्नामदिवीवत्रमकुमूलं धूनां

भसर्वमर्घं हृदि स्तु ॥ सर्वं मां वक्रु कुरु विश्वमूर्ति ध्याति म
यातन्दयनश्चितात्मा ॥ अनावलीयानूवृणाकिं वक्रु ॥ सञ्ज्ञ
ध्वनः पारु कया द (लोचनं) ॥ आरुस्व नृपे लो विरुह विष्ट
पायात्सरुमं नि विष्ठा मूर्ति ॥ यामां स्व नृपे लो नृणां कः
वाति संजीवनं वक्रु मां कुलल्य ॥ कल्यावसानं शुवनाः
दिदग्ध्या सञ्ज्ञा विष्टा रू नृपति रू प्रिनील ॥ सकाल वृडा

वरु मांदवाग्ने द्योत्यादिहीनं नखिलाच्च ता यातु ॥ पुदीफ
विश्रुतनकावरासा विद्यावनाहीति कृत्तयोलिः वरु
मूर्खकल्पनूपमिने ॥ पाश्यांस्तिता नरु रुमासज्जम् ॥ क
भववदी कृष्णपाशधूल कपालठंकारुने गुलीदधन ॥
वरुमूर्खा नीलनूचिन्निने ॥ पायादधानादिनिदकि
लस्यां ॥ कन्दनूहीखरुटिकावरासा वदार्कमालावः

नदीदाश्चर्यं कन ॥ गुरुवृकुडनूपरावः सथाधिर्
तावरुमां पतीयां ॥ वनाक्रमाला रुयठकीदसः सत्राजकिं
रुल्समानवर्णः ॥ तिलावनध्वनूचरुमूर्खामां पाया
इदीयादिनिवामदव ॥ वदार्कयाश्रु कृष्णपाशठकी क
यालठका रुतिधूलपालिः ॥ सितयूतिः पश्रु मूर्खावता
त्तामीक्षानः ॥ उर्ध्वपत्रमयकाशः ॥ मूर्धानमयानमव

नुमोलि कलिं ममाद्या दधरात्र नरु ॥ नरु ममाद्या हु गतं
रुहात्री नासां मयात्र कुरुविश्वनाथ ॥ पायाकुती मंयु
तिगीतकाहि ॥ कपालमयात्सु तर्कपाली । वं कुं सदा
त्ररुपुर्णवक्त्र ॥ जिह्वां सदात्र रुरुवदजिह्व ॥ कंठं गि
नी ॥ ॥ वरुनीलकण्ठ ॥ पातिद्वयं पातुपिनाकपालि । दा
मूलमयात्सु मधुमवाद् वं कल्लददमखातका ॥
द्यात् ॥ ममाद्यत्र पातुगिनी नुवन्ता । मधुं ममाद्या नमद
द्या ।

नाककात्रि ॥ रुं नमताता ममपातुनारिं । पायात्कटिं व
कुटिनी ॥ वामं ॥ उवदयं पातुक्वत्रमिगा । उं द्यदयं
यं गवकं उत्रयात् ॥ जानदयं मं रुगदी ॥ वत्रयात् । पादो
ममाद्यात्सु ववन्त्यपाद ॥ मरुं वत्रपातुदिनादियाम
मां मधुयामं वरुयामं देव ॥ पायं वकं ॥ पातुहृतीय
यामं वषधं ॥ पातुदिनाकयामं ॥ पायान्निगं दोम

शिखरासामांगं गंधवानकुरुमोनिधी॥०॥ लोत्रीपतिर्ष
पुनिष्ठावमानमृष्यः॥ यात्रकुरुसावैकालं॥ अर्कस्तिर्ग
कुरुर्वाकीयामां स्ताने॥ सदापातुवहि॥ स्तिर्गमां॥ तदक्तवः
पातुपतिः॥ पशूनां सदाजिवायकुरुमांसमनात॥ तिष्ठन्
मयाकुरुवनेकनाथः॥ पायादुक्तं पमथदिनाथः॥ वेदा
नवेद्याः॥ वरुमांनिषर्कं॥ मामयथः॥ पातुजिवः॥ शयानं॥

मार्गेषुमांनकुरुनीलकण्ठः॥ लोलादिइर्गेषूप्रणयानि
॥ अत्रत्येवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगयाधउदात्रर्कि
॥ कल्याणकाणपवद्रूपकापस्फुणहृदासावैरिणानका
॥ ध्यात्राविभनार्त्तवइन्निवात्रः॥ सदागयादकुरुवीरर
॥ पश्यत्यसातर्जनेथाववृथसहसुलकायूतकाठिनीः
षली॥ अर्कदिनीतां गतमाततायिनी॥ शिखांमृगधान

कूभनधनया ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
लः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
मत्वीधनः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
दाहिवावकः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
स्य ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
तीतिमसः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥

॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
तत्त्वविज्ञाय सकललाके ककः ॥ १ ॥
कललाके ककः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
क्रि ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
कलः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥
लाके ककः ॥ १ ॥ निरुक्तुष्टुलया नलाचि कलः ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
मीमांसा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

य निर्वृत्तयति नृपाय निवाहासाय निवामयाय निष्पृ
क्षय निष्कलकषय निवक्तकाय निर्वृद्धाय निष्कर्षकाय नि
मलाय निम्नमाय निरूपमतिरथाय निवाधनाय नि
त्युर्ध्वपत्रिपूर्वसञ्चिदानन्दाद्ययपत्रमष्टान्नपकाश
आनृपाय॥ अयज्जयमहावृद्धमहाबोद्धवीरहृदावगात्र
महाहोत्रवकालहोत्रवकपालमालाधलखद्वान्निखद्व

वर्मपाशमक्ष्णमन्त्रं लवापवालगदागक्रिः
विष्णुपालमामलमृगलमृदलपागयत्रलुधत्रिघ
कुलुलीगगच्छिवकायधरीषलकलसरुमुमखदं
सुकनालविक्रहाहृदासविष्ठात्रितवक्ष्णमृदल
नागलुक्कुलनागलुहात्रनागलुवलथनागलु
वर्मधत्रमृथक्षीययम्वकशिपूनाककविनृपाक

विश्ववाक्यविश्वप्रयविश्वप्रवृत्त्यर्थवाहनविष
विहृषविश्वतामेवतालकलकम. कोलाकलम
हामृत्त्यर्थनागयनागय॥ वागर्थयम्भसादयोम
दयविषमप्यर्थनामयत्रार्थमात्रयमात्रय
ममगर्भमज्ञातयाज्ञातयज्ञलनविद्यावयकभ
वैलहिन्यहिन्यस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्व

पाथय विधाथय मंगलनविधाथय विधाथय वाले
 संताउय संताउय नक्रां सिहीषय हीषय हूता नवि
 दावय विदावय कूपा उवताल मा नीगलवक्ष नोद
 सान् संतासय संतासय ममा हय कू नू कू नू विरुस
 मा ध्वसया ध्वसय न न क म हारु या मा मू द्वा द्वा
 न संजीवय संजीवय नू कू ह्या मा द्या या द्या य य

दूतादुर्वममानंदायानंदय गिववेत्तनमाकादय
कोदयहतीयमभुलसंतापय कपयोममाकाद
याकादय शीम्वक नमस्कनमस्क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कावनयदातु ॥ कीलाय ॥ पाकमृष्टा मदात्रागरुतापि
वा ॥ सद्य ॥ मुखमवाप्राति दीर्घमायुश्च विदति ॥ सर्वबाध
पुष्टमनं सोमार्ज्यविवर्द्धनं ॥ याधरु कवचं जीवं सदवे
वपिपुष्टं ॥ मदापातकसंघातं मृष्टात्रापातक ॥ द
दाकं मुक्तिमाप्राति गिवसमानतावतः ॥ नमपिष्टद्वयाव
त् ॥ जीवं कवचमरुमं ॥ धनयस्त्रमयादहं सद्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अवाप्स्यति ॥ पापसिंहासनं विष्णुं ॥ नमोऽस्मिन् पृथिवीम
मां ॥ ॐ तिरुदायुधं सम्यगनूलाय समारुहकं ॥ ॐ त्र्यम्बका
सृष्टरायागी तस्मै पार्थिवस्तु नमः ॥ ददोर्ध्वं सर्वमहानादं
स्वर्गं वा त्रिलोकदत्तं ॥ पूनश्च तस्मै मंगलं तदन्तर्गते
त्रिताम्युगं ॥ वदन्तं षट्सहस्रस्य द्विगुणं शिववन्द
नो ॥ तस्मै परावात्सं पापवलेभ्यश्च धृतिः स्मृतिः ॥ सना

जपुर्गं शुशुभं लालदत्तं ॐ वशिष्ठा ॥ तमादया ॐ तिरु
यः सयागी नृपतदत्तं ॥ एषस्वश्रामयादत्तं लपामनान
तावत् ॥ शितधनमिमं स्वर्गं यस्मै दद्यात्समस्तु ॥ ससय
मृयते ॥ ॐ साक्षात्सत्यविवस्वयं ॥ तस्य धीरव्यतिर्दृ
यः शृण्वन्ति तवादिताः ॥ तं मूर्च्छिता विनश्यन्ति न्यस्तं भुवि
यत्तत् ॥ धीरस्वश्रविमोदितो यो यनसे न्यविधाति नो ॥ आ

तस्यैव न्यस्य न कानो सोम्य न जावि वदन्तो ॥ एतथाश्च पुत्राव
न (हो) वन कवच नय ॥ द्विष ह्यदुसनागता वलनमह
पापिवा ॥ रुसधन ॥ सामथ्या कुरु सेन्य विजिष्यसि ॥ ता
ली संयुजित ॥ साधु यागी वस्त्र गतिं यथो ॥ ॥ ॐ तिथी
स्तुतय नो ॥ वक्ष्यामि नख ॥ शुभिव मर्म कथनं नाम द्वाद
(॥ १५ ॥ यथा ॥ ॥ श्री ३ सदा गित य सनाम् ॥ ॥

श्री अर्द्ध नात्री श्व नाय नमः ॥ ॥ ऊटा ऊटा दसं
प्रम प्रम नि ॥ हिम्यति मन्त्री ॥ चित्ता त्वी वित्त त्व
नी वित्ता उमान मूर्धनि ॥ धग धग धग धग नत
साट पट्ट पावक कि ॥ अत्र वद ॥ अश्व प्रम निप
ति रुज मम ॥ ॥ ॥ धना धन नुन नि नी वित्ता म
व भूव भूव ॥ सुवद गन ॥ सन नि प्रमा दमान

मानसं कृपा कटाक्ष धारणा निबद्ध दृष्टिनायादि
 कविचिदमनमना विनादमं गुक्मुनि ॥ २ ॥
 ऊढा मुकुक्षु विक्षितसूत्रहृन्मनसिपुहा कद
 म्बकं कुम्भद्रवपुलिफदिग्धमसुखं मदाभ्यसि
 ध्वनासुत्रासुत्रत्वेगुक्त्रयीयमाधुनं मनाविनाद
 मकुनं विहर्तुहर्तुहर्त्रि ॥ ३ ॥ मद्रूपसावन

नारु २

पुरुषाणां स्वतः षाण्यत्र प्रसूनधूलिध्वजनीति
 ध्वसत्राधिपौ ॥ ४ ॥ उरुक्षमातया निबद्धजानं
 कूटकं गिर्या विरायजायनीत्रकात्रवभुल
 स्वेत्र ॥ ४ ॥ तत्ताटवत्वेन कौतुहलनक्षयसुति
 क्षयातिपीनपञ्चमयकं नमन्ति नमो नायकं
 सुधामयूखलखया विराजमानां स्वतः मद्रु ॥

कपालिसम्यदसत्ररुहात्मसु नः॥ ३ ॥ कत्र
लता लवटिका धगद्वगद्वगकूल दनः कया
नीकृगंयवपुपश्च नभयक । धत्राधत्रननानि
नीकृवाग्रविपुपुक प्रकल्पेनकालित्विनि
प्रितावननगनिर्मम ॥ ३ ॥ नवीनमद्यमपुतानि
रुद्धद्वनहृत्र कृद्वनिगायिनीगमः प्रवन्ध

वधूकभत्रः । तित्तिम्यनिर्झनीधत्रकृतापुकृत्त
सिन्धुनः कना तित्तिमनवधूत्रः त्रयैकगद्वत्रन्धः
त्रः॥ ॥ प्ररुत्तनीतपकृजप्रवपुकातिमयुग
विउम्वकृकृकृम्वनीत्रविप्रवन्धकभूत्र । समः
विदं प्रत्रविदं गवविदं सखविदं गजविदं
न्यकविदं गमनकविदं रुजः ॥ ४ ॥ अखवृम

वैमञ्जलाकलाकदममञ्जरी मत्रियुवाहमाधूनी
विहङ्गुतामधुवर्गं । सत्राककैयुत्राककैयुत्राक
कैमखाककै गङ्गाककायककाककैगमककाक
कैरुङ्ग ॥ २ ॥ ऊययदगुविहङ्गुमङ्गुमङ्गुऊयमधुस-
दिनिगममङ्गुमङ्गुगानदयायाहनाद । धिअधि
मिधिमिधनमङ्गुऊयुनमञ्जल धोनकमधुव

लिङ्गः प्रवृत्तगुवृत्तनिवृत्तः ॥ १० ॥ दृगद्विष्टि
गत्यायाकुङ्गुमिमीकिकपञ्जा नत्रिष्टुनल्लहापुया
सुदृष्टिपङ्कपङ्कयाः । गङ्गात्रविन्दुवङ्गुमाः पङ्क
महीमद्वन्द्या समयवलिङ्गकदागिर्वङ्गम
ह ॥ ११ ॥ कदागितिमयतिङ्गुनीनिकुङ्गुकोटल
वैमन्त्रविमङ्गुदमीगिः मदागिर्वङ्गुमञ्जलीवङ्गु